वर्ष :: 33 अंक : 42
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

बोकारो :: रविवार, 16 जुलाई, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बदलेंगे झारखंड की तकदीर और तस्वीर : सीएम

बोकारो को मिली 17097.82 लाख की सौगात, नावाडीह में 70 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास

योग्य विद्यार्थियों को विदेशों में उच्च शिक्षा दिलाएगी सरकार

संवाददाता

बोकारो : झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि एक लंबे संघर्ष और आंदोलन के बाद हमने झारखंड तो ले लिया, लेकिन पिछले दो दशकों में इस राज्य को जहां होना चाहिए, वहां नहीं नहीं पहुंच सका। तमाम संसाधनों और क्षमताओं के बाद भी झारखंड की गिनती पिछड़े राज्यों में होती है। अब हमारी सरकार इस राज्य की तकदीर और तस्वीर बदलने के लिए कृतसंकल्प है। इस कड़ी में कई योजनाएं शुरू की गई हैं और कई शुरू होंगी। ये योजनाएं झारखंड की दशा-दिशा और स्वरूप को बदलने का काम करेगी। मुख्यमंत्री श्री सोरेन ने बोकारो जिले के नावाडीह में योजनाओं के उद्घाटन-शिलान्यास एवं परिसंपत्ति वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। सीएम ने कुल 17097.82 लाख रुपए की लागत से 70 परियोजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी हर योजना और नीति जन आकांक्षाओं के अनुरूप है। सरकार जो भी कार्य योजना बनाती है, उसमें जनता की सोच और उसकी उम्मीदों का विशेष ध्यान रखा जाता है। समाज का कोई भी वर्ग और तबका हो, हर किसी के हित और कल्याण से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता दी जा रही है।

नौकरियों का खुला दरवाजा, स्वरोजगार की भी योजनाएं

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री सोरेन ने कहा कि यहां बड़े पैमाने पर नियुक्ति प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। नियुक्ति पत्र वितरण करने का सिलसिला लगातार जारी है और यह आगे भी चलेगा। वहीं, जो अपना कारोबार करने के इच्छुक है, उन्हें मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत अनुदान आधारित लोन उपलब्ध कराये जा रहे हैं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा - 'हमारी कोशिश है कि युवा रोजगार-स्वरोजगार से जुड़ें और इस प्रदेश

बच्चे पढ़ाई की चिंता करें, खर्च सरकार देगी

मुख्यमंत्री ने शैक्षणिक उत्थान पर बल देते हुए कहा कि बच्चे सिर्फ अपनी पढ़ाई की चिंता करें, पढ़ाई का खर्च सरकार वहन करेगी। उन्होंने कहा कि स्कूली शिक्षा से लेकर विदेशों में उच्च शिक्षा के लिए सरकार की योजनाएं हैं। बच्चियां स्कूल से जुड़ी रहें, इसके लिए सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना शुरू की गई है। छात्रवृत्ति राशि में इजाफा किया गया है। विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की कोचिंग से लेकर मेडिकल इंजीनियरिंग और लॉ जैसे कोर्सेज की पढ़ाई पर होने वाले खर्च को भी सरकार वाहन कर रही है। अगर विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसका शत-प्रतिशत खर्च सरकार वाहन कर रही है। इसी कड़ी में गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना शुरू की जा रही है। इसके तहत 15 लाख रुपए तक का एजुकेशन लोन न्यूनतम ब्याज दर पर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जाएगा। आने वाली पीढ़ी शिक्षित और मजबूत बने, इसके लिए कई योजनाएं हैं। सरकार ने निजी विद्यालयों की तर्ज पर बच्चों को बेहतर और गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने के लिए स्कूल ऑफ एक्सीलेंस की शुरूआत की है। वहीं अन्य स्कूलों में पढ़ाई से संबंधित सभी जरूरी संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। सरकार पहली कक्षा से लेकर डिग्री तक की पढ़ाई की व्यवस्था सुनिश्चित कर रही है, नए मेडिकल, इंजीनियरिंग और उच्च शिक्षण संस्थान खोले जा रहे हैं, ताकि बच्चों को अपने ही राज्य में पढ़ाई के बेहतर अवसर मिल सके।

इन योजनाओं का हुआ उद्घाटन- शिलान्यास

मुख्यमंत्री ने 2322.65 लाख रुपए की 17 योजनाओं का लोकार्पण किया एवं 14775.17 लाख रुपए की 53 योजनाओं की आधारशिला रखी। कार्यक्रम में 10067 लाभुकों के बीच 5636.94 लाख रुपए की परिसंपत्ति बांटी। उन्होंने मॉडल डिग्री कॉलेज, गोमियां के भवन का उद्घाटन किया। चंदनकियारी, गोमिया, चंद्रपुरा और चास स्थित उच्च विद्यालय में अतिरिक्त कक्षा और मल्टीपरपज ऑडिटोरियम के निर्माण कार्य की आधारशिला रखी। पेटरवार, गोमिया, चंदनकियारी, नावाडीह और चास में स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में ऑडिटोरियम का शिलान्यास किया। एकीकृत धनवंतरी आयुष अस्पताल, बोकारो के निर्माण की नींव रखी गई। 50 बिस्तरों वाले क्रिटिकल केयर अस्पताल तथा मॉडल डिग्री कॉलेज, नावाडीह का शिलान्यास भी किया गया।

को सशक्त एवं मजबूत बनाने में अपना योगदान दें। मुख्यमंत्री श्री सोरेन ने राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी से **(शेष पेज- 7 पर)**

साक्षात्कार विश्व-प्रसिद्ध वायलिन वादक उस्ताद जौहर अली से खास बातचीत, कहा- संगीत के क्षेत्र में करियर की अपार संभावनाएं

कभी कम नहीं होगी भारतीय शास्त्रीय संगीत की अहमियत, देवी-देवताओं की तरह पूजनीय

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : देश के विश्वविख्यात वायलिन वादक उस्ताद जौहर अली खान का कहना है कि 'भारतीय शास्त्रीय संगीत दुनियाभर के समस्त संगीत का मूल और आधार है। यह कभी नहीं बदल सकता। अजर-अमर और अटल है। जिस प्रकार देवी-देवता हमारे लिए पूजनीय व अटल हैं, ठीक उसी प्रकार शास्त्रीय संगीत हमारी आस्था से जुड़ा है, जिसका कोई भी बाल-बांका नहीं कर सकता।' डीपीएस (दिल्ली पब्लिक स्कूल), बोकारो में 'स्पिक मैके' की ओर से आयोजित अपने कार्यक्रम को लेकर पहुंचे उस्ताद जौहर ने 'मिथिला वर्णन' से एक खास बातचीत में ये बातें कहीं।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि संगीत के क्षेत्र में भी बच्चे अपना अच्छा भविष्य बना सकते हैं। संगीत के प्रति बच्चों में रुचि जगाने के लिए स्कूल कॉलेज से बेहतर कोई जगह नहीं। भारतीय संगीत आगे बढ़े, इसी उद्देश्य से वह स्पिक मैके के साथ होकर स्कूल-कॉलेजों में जा-जाकर देश में एक अलख जगा रहे हैं। पाश्चात्य संगीत के दुष्प्रभावों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि हमारा शास्त्रीय संगीत एक ऐसी चीज है, जिसमें मिलावट नहीं हो सकती।

अगले माह हिरोशिमा में करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

पटियाला रामपुर घराने से ताल्लुक रखने वाले महान वायलिन वादक स्व. उस्ताद गौहर अली खान के सुपुत्र एवं शिष्य उस्ताद जौहर अली ने स्वच्छ भारत अभियान के लिए संगीत दिया है। स्वच्छ भारत व तंबाकू-निषेध कार्यक्रम के एम्बेसडर भी हैं। रुद्र वीणा वादन में भी पारंगत जौहर अली आगामी 21 जुलाई को दिल्ली में जी-20 देशों के सम्मेलन में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। इसके बाद 4 अगस्त को जापान के हिरोशिमा में होने वाले शांति संगीत कार्यक्रम में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। रेडियो-दूरदर्शन के ए ग्रेड आर्टिस्ट होने के साथ-साथ वह अच्छे गायक, संगीत-रचनाकार व लेखक भी हैं। फेस्टिवल्स ऑफ इंडिया, इंडोनेशिया, साउथ पैसिफिक गेम्स, फिजी और फ्रेंच मूवी के लिए भी वह संगीत कंपोज कर चुके हैं। अपनी विधा में उनकी प्रसिद्धि का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम भी उनसे वायलिन-वादन के गुर सीख चुके हैं।

टीमवर्क और मेहनत भूलते जा रहे लोग

आज के जमाने के गाने कुछ दिन अच्छे लगते हैं, फिर हम उन्हें भूल जाते हैं। वे क्षणभंगुर की तरह हैं। लेकिन, पुराने जमाने के गीत आज भी सदाबहार हैं, आगे भी रहेंगे। इसका कारण यह है कि उन गानों में मेहनत थी, टीमवर्क था। समय, परिवेश, **(शेष पेज- 7 पर)**

– संपादकीय –

कामयाबी के बढ़ते कदम

हमारा देश अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। देश के सपने, गौरव और भरोसे को लेकर चन्द्रयान-3 चन्द्रमा को गले लगाने के लिए निकल पड़ा है। हमारे वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष की दुनिया में सबसे कम खर्च में बुलंदी का यह झंडा गाड़ा है। झारखंड के लिए इसमें विशेष गौरव की बात यह है कि श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेन्टर के जिस लॉन्चिंग पैड से चन्द्रयान-3 ने उड़ान भरी, वह रांची के हैवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन (एचईसी) में निर्मित है। साथ ही, सैटेलाइट को संभालने वाला क्रेन भी एचईसी में ही बनाया गया है। भारत के पास आज ऐसी अत्याधुनिक तकनीक उपलब्ध है, जिसका लोहा अमेरिका और दुनिया के तकनीकी एवं साधन संपन्न देश भी मानते हैं। इसरो ने 14 जुलाई को श्रीहरिकोटा से चंद्रयान-3 का सफलता पूर्वक प्रक्षेपण किया। यह पृथ्वी की कक्षा में स्थापित भी हो गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रक्षेपण की सफलता पर वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि अंतरिक्ष में चंद्रयान-3 एक नए चैप्टर की शुरुआत है। अंतरिक्ष में बढ़ते कदम की वजह से चंद्रमा के साथ-साथ अन्य तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। दरअसल, चंद्रमा के बारे में कभी हम किस्से और कहानियों में सुनते थे। दादी और नानी की कहानियों में उसके बारे में जानकारी मिलती थी। लेकिन, आज वैज्ञानिक शोध और तकनीकी विकास की वजह से हम चांद को जीतने में लगे हैं। चन्द्रलोक की बहुत सारी जानकारी हमारे पास उपलब्ध है। दुनिया के लिए चांद अब रहस्य नहीं रह गया है। अब वहां मानव जीवन बसाने के लिए भी शोध किए जा रहे हैं। वैज्ञानिक शोध से यह साबित हो गया है कि चांद पर जीवन बसाना आसान है। सफल प्रक्षेपण के बाद इसरो मिशन चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग की तैयारी में जुटा है। इससे पहले चंद्रयान-2 कक्षा में स्थापित होने के पहले विफल हो गया था। जबकि, चन्द्रयान-3 पृथ्वी की निर्धारित कक्षा में प्रवेश कर चुका है। उम्मीद है कि देश का यह अभियान सफल होगा और भारत का नाम अंतरिक्ष युग में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। दरअसल, चंद्रमा पर सफल और सुरक्षित लैंडिंग करने वाले अब तक सिर्फ तीन देश हैं- अमेरिका, रूस और चीन। इसके बाद भारत भी इसमें शामिल हो जाएगा, जो देश के लिए गौरव की बात होगी। भारतीय वैज्ञानिकों के के इस अभियान पर दुनिया की निगाहें टिकी हुई हैं। अमेरिका जैसे देश के अलावा चीन इस पर विशेष रूप से नजर गड़ाए हुए है। भारत की सफलता अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में जहां इन देशों के लिए चुनौती साबित होगी, वहीं अभी तक अंतरिक्ष में अपना आधिपत्य समझने वाले देश अब भारत की ताकत को समझने लगेंगे। दुनिया की सबसे बड़ी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को सफल प्रक्षेपण पर बधाई दी है। यूरोपीयन स्पेस एजेंसी, इंग्लैंड और फ्रांस ने भी सफल प्रक्षेपण के लिए भारतीय वैज्ञानिकों की पीठ थपथपाई है। भारत के धुर विरोधी पाकिस्तान ने भी चंद्रयान-3 के सफल प्रक्षेपण के लिए इसरो को शुभकामनाएं दी हैं। यह अंतरिक्ष में भारत की बढ़ती ताकत का परिणाम है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

शिवलिंग का स्वरूप और महत्व

– रूणा रश्मि 'दीप्त' –

देवाधिदेव महादेव का सर्वप्रिय मास है सावन। वैसे तो सावन धरा पर मनुष्य का भी प्रिय मास है। बारिश की फुहारों के साथ ही साथ सभी दिशाओं में फैली हरियाली हर किसी का मन मोह लेती है।

जहां एक तरफ इस महीने को प्रेम का प्रतीक माना जाता है, वहीं सावन और शिव एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। मान्यता है कि भगवान शिव इस पावन मास में धरती पर वास करते हैं। शायद पृथ्वी के इस मनोरम छवि को करीब से देखना चाहते हों। फिर तो भक्तजनों के लिए भी यह एक सुनहरा अवसर ही होता है और वे प्रभु को प्रसन्न करने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ना चाहते हैं। तभी तो पूरे सावन मास महादेव की पूजा आराधना के साथ साथ शिवलिंग पर जलाभिषेक की परंपरा है।

समस्त देवताओं के मध्य एकमात्र शिव ही हैं जिनकी पूजा लिंग स्वरूप में की जाती है। शिवलिंग के इस स्वरूप की समानता निराकार ब्रह्मांड के स्वरूप से की जाती है। अर्थात शिवलिंग के माध्यम से सकल ब्रह्मांड की पूजा की जाती है।

शिव को आदिदेव की संज्ञा दी जाती है जिसके अनुसार सकल चराचर जगत के मूल भी शिव हैं और संहारक भी शिव को ही माना जाता है। इसका अर्थ ये हुआ कि शिव ही उत्पत्ति और विनाश दोनों के कारक हैं। अनादि शिव से ही उत्पन्न होकर यह ब्रह्मांड शिव में ही विलीन हो जाता है।

लिङ्ग पुराण के अनुसार शिवलिंग निराकार ब्रह्मांड का ही वाहक है, इसके स्वरूप का अंडाकार पत्थर ब्रह्मांड का प्रतीक है और इसका आधार, जिसे 'पीठम्' कहते हैं, ब्रह्मांड को पोषण व सहारा देने वाली सर्वोच्च शक्ति है। अर्थात शिवलिंग में शिव और शक्ति का सम्मिलित वास है। इसीलिए इसके पूजन को अत्यधिक फलकारी माना गया है। स्कंद पुराण के अनुसार लिंग स्वरूप को अनंत आकाश (अंडाकार ब्रह्मांड) और आधार को धरती के रूप में माना गया है।

एक अन्य मान्यता के अनुसार अथर्ववेद के स्तोत्र में एक स्तम्भ की प्रशंसा की गई है और संभवतः इसी स्तंभ का रूप बदलते हुए शिवलिंग की पूजा आरंभ हो गई। अथर्ववेद के स्तोत्र में अनादि और अनंत स्तंभ का विवरण दिया गया है और यह कहा गया है कि वह साक्षात् ब्रह्म है और कालांतर में इसी स्तम्भ का स्थान शिवलिंग ने ले लिया।

एक पौराणिक कथा के अनुसार जब हिमसुता पार्वती ने भगवान शिव का वरण अपने पति के रूप में कर लिया और शिव तपस्या में लीन इस बात से अनभिज्ञ थे तब नारद मुनि ने पार्वती जी को अपनी हथेली के ऊपर शिव के लिंग स्वरूप को स्थापित करके उनकी आराधना करने की सलाह दी। पार्वतीजी ने नारद जी की बातों का अनुसरण किया, तत्पश्चात शिव जी को प्रसन्न कर उन्हें वर के रूप में प्राप्त कर अपना मनवांछित फल प्राप्त किया। तभी से शिवलिंग के इस स्वरूप की पूजा की परंपरा शुरू हो गई। इस प्रकार लिंग स्वरूप में भगवान शिव हैं और आधार में माता पार्वती का हस्त और मान्यता यही है कि इस स्वरूप में पूजे जाने से महादेव शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं और मनोनुकूल फल प्राप्त होता है।

एक अन्य पौराणिक मान्यता के अनुसार शिवलिंग के पूर्ण स्वरूप में भोले शंकर के समस्त परिवार का वास है। लिंग और आधार स्वरूप माता-पिता (शिव-पार्वती) के साथ ही उसके अग्र भाग के दोनों किनारों पर गणपति और कार्तिकेय विराजते हैं और बीच का भाग जहाँ से जलाभिषेक का पवित्र जल बहकर नीचे की तरफ जाता है वहाँ भगवान शिव की पुत्री नर्मदा का वास है। इस प्रकार एकमात्र शिवलिंग की पूजा से भोले सपरिवार प्रसन्न होते हैं। सामान्यतया शिवलिंग प्राकृतिक रूप से ही स्वयंभू होते हैं जिसे उसी स्वरूप में मंदिरों में स्थापित किया जाता है। किंतु कुछ मंदिरों में मानव निर्मित शिवलिंग की भी स्थापना प्राण प्रतिष्ठा के साथ की जाती है जो अधिकतर नर्मदा नदी के तट पर पाए जाने वाले पत्थरों से निर्मित होते हैं और नर्मदेश्वर महादेव कहलाते हैं।

कथित सभ्यता

मैथिली कविता

– शम्भुनाथ –

कुन्तल काढल देखल सबदिन
गूहल पाछू लटकल बेनी।
आइ केश कें कशा बनौने
खोंसल कांटा कांटी छेनी।।

मुख मण्डल केर आभा आगू
छलै ज्योत्सना चन्द्रक लज्जित।
कृत्रिम क्रीमक लेप लगा कें
होइछ आजुक तरुणी सज्जित।।

झुमका बाली कर्णफूल सं
सुन्दर लागय कानक तरकी।
आई कान मे लटकि रहल छै
हाथक बाला बड़की बड़की।।

कज्जलि कोर नयन पुट लागय
डगडग करइत जलमय डोका।
काजर नयन छूति नञि कनिञो
अलगल अछि पाकल के फोका।

समतोला केर फांक अधर द्वय
अरुण लालिमा रसमय नेने।
कारी पीयर ठोढ लगै छै
अधिक लेप कृत्रिम पुट देने।।

परिधानक हम करी कल्पना
नारी सगरो देह नुकौने।
पृष्ट भाग कनिञो नञ झांपल
जाबि पयोनिधि अर्ध डुबौने।।

नारी लज्जा साड़ी मे छल
आँचर घोघ मरौत काढ़ने ।
पुष्ट पठारक कथा के कहय
जाल महोदधि छाजन देने।।।

नग्नताक उद्दण्ड प्रदर्शन
क'रहलै अछि नव किछु बाला।
सभ्य समाजक नयन बन्द छै
लागल सब केर मुंह मे ताला।।

बीच बाट ध' हाथ चलैए
रहि-रहि करइत अछि आलिंगन।
लाज-धाख सब छोड़ि सभा मे
मुख मण्डल पर अंकित चुम्बन।।

सभ्य समाजक की परिचय अछि
नहि जानी की होयत भावी।
अपन सभ्यता छोड़ि पच्छिमक
विकृत भास लगा कें गाबी।।

एक लाख युवाओं को हुनरमंद बनाएगा डीबीएफ

कौशल भारत, कुशल भारत... डालमिया भारत ने बनाई देशभर में 8 नए दीक्षा केंद्र शुरू करने की योजना

कार्यालय संवाददाता
बोकारो : डालमिया भारत लिमिटेड की कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी शाखा डालमिया भारत फाउंडेशन (डीबीएफ) ने कौशल भारत, कुशल भारत निर्माण की दिशा में अपने अहम कदम बढ़ाए हैं। डीबीएफ देशभर में एक लाख युवक-युवतियों को हुनरमंद बनाकर उन्हें स्वावलंबी बनाएगा। डीबीएफ ने अपने प्रमुख कार्यक्रम डालमिया इंस्टिट्यूट ऑफ नॉलेज एंड स्किल हार्नेसिंग (दीक्षा) के तहत वित्त वर्ष 30 तक एक लाख युवाओं को प्रशिक्षित करने की अपनी योजना की घोषणा की है। दीक्षा भारत में ग्रामीण समुदायों में वंचित युवाओं के लिए कौशल विकास और स्थायी आजीविका को सक्षम करने के लिए समर्पित है।

कार्यक्रम की पहुंच को मजबूत करने के लिए डीबीएफ वित्त वर्ष 24 में 8000 प्रशिक्षुओं की संचयी प्रशिक्षण क्षमता के साथ 15 केंद्रों के अपने मौजूदा नेटवर्क के अलावा पूरे भारत में 8 नए केंद्र खोलेगा। नए केंद्र आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, ओडिशा और तमिलनाडु में शुरू किए जाएंगे।

आर्थिक सशक्तिकरण व बेहतर आजीविका मकसद : सीईओ

विस्तार योजना की चर्चा करते हुए डालमिया भारत फाउंडेशन के सीईओ अशोक कुमार गुप्ता ने कहा कि डालमिया भारत में हमारा उद्देश्य समावेशी विकास के लिए कार्यक्रम बनाना है और हाशिए के समुदायों के जीवन पर एक ठोस प्रभाव डालने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विश्व युवा कौशल दिवस की पूर्व संध्या पर दीक्षा के लिए अपनी विस्तार योजनाओं की घोषणा करते हुए उन्होंने खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य हमारे देश के कार्यबल में महत्वपूर्ण कौशल अंतराल को पाटना, आर्थिक सशक्तिकरण और बेहतर जीवन के अवसर पैदा करना है। दीक्षा के माध्यम से हम एक कुशल और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की उम्मीद करते हैं।

2016 में शुरू हुआ था कार्यक्रम

यह कार्यक्रम 2016 में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के साथ साझेदारी में शुरू किया गया था। डीबीएफ ने ओडिशा और कर्नाटक के राज्य कौशल विकास मिशनों के साथ-साथ नाबार्ड, एनबीसीएफडीसी, ऑएसडीए, बॉश, श्नाइडर इलेक्ट्रिक आदि जैसे संगठनों के साथ सहयोग को शामिल करने के लिए साझेदारी का विस्तार किया है।

डालमिया भारत व बीएसएल संचालित दीक्षा के प्रशिक्षणार्थियों ने दिखाए अपने कौशल

विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर बोकारो दीक्षा में विभिन्न ट्रेड में प्रशिक्षण पा रहे प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपने-अपने हुनर का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रकार की गतिविधियां की गईं। सर्वप्रथम इलेक्ट्रिकल ट्रेड के प्रशिक्षुओं ने यह प्रदर्शित किया कि बिना सुरक्षा उपायों के इलेक्ट्रिकल कार्य करने पर किस प्रकार की दुर्घटना हो सकती है। इसके पश्चात जनरल ड्यूटी असिस्टेंट के प्रशिक्षुओं द्वारा आपातकाल सेवा का प्रदर्शन किया गया, जिसमें उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि किस प्रकार इलेक्ट्रिकल दुर्घटना से ग्रसित व्यक्ति को तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान की जा सकती है। सी आर एम के प्रशिक्षुओं ने यह प्रदर्शित किया कि किस प्रकार आकस्मिक अवसर पर हेल्पलाइन नंबर अथवा आपातकालीन सेवाओं का लाभ लिया जा सकता है। कार्यक्रम के दूसरे चरण में पांचों ट्रेड के प्रशिक्षुओं ने नागपुरी गाने पर नृत्य प्रस्तुत किए। इसके पश्चात सेविंग मशीन ऑपरेटर के प्रशिक्षुओं ने चित्रकला प्रतियोगिता से विश्व युवा कौशल दिवस की महत्ता को प्रदर्शित करने की कोशिश की। कार्यक्रम के समापन अवसर पर संस्थान के प्रमुख उमेश प्रसाद ने सभी ट्रेड के प्रशिक्षणार्थियों को विश्व युवा कौशल दिवस पर बधाई संदेश देते हुए जीवन में कौशल के महत्व के बारे में बताया।

सक्सेस स्टोरी डीपीएस बोकारो के रवि को एनआईडी में मिला 12वां रैंक, प्राचार्य डॉ. गंगवार ने दी बधाई

क्लास बंक कर आर्ट रूम में बिताता था समय, आज देश के सर्वश्रेष्ठ डिजाइनिंग संस्थान एनआईडी अहमदाबाद में दिखा रहा अपनी प्रतिभा

अनु वंशिका और अनु प्रिया को निफ्ट में मिली शानदार सफलता

संवाददाता
बोकारो : दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो के होनहार विद्यार्थी रवि शंकर सोरेन का चयन देश के सर्वश्रेष्ठ डिजाइनिंग संस्थान माने जानेवाले एनआईडी अहमदाबाद में हुआ है। कोलकाता में दो चरणों में आयोजित कठिन दौर की परीक्षा के बाद उसने अखिल भारतीय स्तर पर 12वां रैंक (कैटेगरी) हासिल किया है। एक खास बातचीत में रवि ने बताया कि एनआईडी अहमदाबाद में लगभग 60 हजार परीक्षार्थी हर वर्ष शामिल होते हैं और मात्र 125 सीटों पर ही दाखिला हो पाता है। वह सौभाग्यशाली रहा जो 125 विद्यार्थियों में उसे भी शामिल होने का मौका मिला।

एक सवाल के जवाब में रवि ने बताया कि कामयाबी के पीछे उसका मूल मंत्र समय प्रबंधन रहा। पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ उसने अपनी कलात्मक प्रतिभा को निखारने में भरपूर समय दिया। इसके लिए उसे कई बार स्कूल में शिक्षकों की डांट भी खानी पड़ती थी। उसने बताया कि क्लास बंक कर वह आर्ट रूम में बैठा रहता था। वहां का अभ्यास और मिलीं सीखें अंततः रंग लाईं। गृहिणी शोभा सोरेन एवं बोकारो इस्पात संयंत्र में सर्विसमैन के रूप में कार्यरत रामनाथ सोरेन के पुत्र रवि को बचपन से ही चित्रांकन में खास रुचि थी। वह निरंतर अभ्यास भी किया करता था, जिसका लाभ अंततः उसे मिला। कक्षाएं शुरू होने से पूर्व रवि ने विद्यालय पहुंचकर अपने प्राचार्य डॉ एएस गंगवार से भेंट की तथा कृतज्ञता जताई। प्राचार्य ने उसे बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। उन्होंने कहा कि डीपीएस बोकारो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभा निखारने का हर अवसर प्रदान करता है, जिससे कि वे संबंधित क्षेत्र में अपना भविष्य संवार सकें।

मां के संघर्ष ने राष्ट्र स्तर पर दिलाई 39वीं रैंकिंग

दसवीं के बाद कुछ अलग करने की लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति के बूते डीपीएस बोकारो की छात्रा अनुवंशिका ने नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (निफ्ट) में अखिल भारतीय स्तर पर 39वां रैंक हासिल कर न केवल अपने विद्यालय व परिवार, बल्कि बोकारो व पूरे झारखंड का नाम राष्ट्रीय फलक पर गौरवान्वित किया है। एक खास बातचीत में अनुवंशिका ने बताया कि उसकी सफलता के पीछे उसकी मां कुमारी मधुलिका का कड़ा संघर्ष और पिता प्रणव कुमार का कुशल मार्गदर्शन रहा। उसने कहा कि उसे कलात्मक एवं सृजनात्मक परिवेश उसके घर से ही मिला। उसकी मां फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर हैं और वह डिजाइनिंग का भी काम करती रही हैं। बेटी अनुवंशिका पर अपनी मां के इस काम का काफी असर हुआ। उसने भी बचपन से अपनी मां के इस काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया था और वहीं से उसकी रुचि इस क्षेत्र में जग गई। एक निजी कंपनी में सेल्स एग्जीक्यूटिव उसके पिता का काम आज यहां तो कल किसी और शहर में था। इससे उसकी पढ़ाई काफी प्रभावित होने लगी। वह यहां अपनी नानी के घर रहने लगी। ऐसे में मां की आर्ट डिजाइनिंग का काम भी छूट गया। उसके छोटे भाई को प्री-नर्सरी स्कूल में दिया गया, परंतु उसकी मां वहां की पढ़ाई से संतुष्ट नहीं हुईं। उन्होंने खुद का एक स्टार्टअप शुरू करते हुए स्कूल ही खोल दिया। मां की इस मेहनत ने उसकी पढ़ाई में काफी सहायता की। 10वीं कक्षा तक उसने अपने करियर के बारे में कुछ भी नहीं फैसला लिया था। उसके पिता ने उसे विज्ञान संकाय लेने की सलाह दी और मार्गदर्शन किया। इधर, डीपीएस बोकारो में शिक्षकों का दिशा-निर्देशन भी मिलता रहा। उसकी मां ने उसे निफ्ट के बारे में बताया। उसने इसी में अपना करियर बनाने का निर्णय लिया और उस दिशा में आगे बढ़ चली। अनुवंशिका ने कहा - डीपीएस बोकारो में उसे जो शैक्षणिक व प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण मिला, उसने उसकी प्रतिभा को विकसित करने में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'बचपन से पेंटिंग का जुनून बन गया करियर'

डीपीएस बोकारो की एक अन्य छात्रा अनुप्रिया ने भी निफ्ट में कामयाबी पाई है। उसे आल इंडिया रैंक 129वां रैंक हासिल किया है। उसे बचपन से ही पेंटिंग में रुचि थी। विद्यालय के शिक्षकों और अभिभावकों का मार्गदर्शन मिला और उसने ग्राफिक डिजाइनिंग के क्षेत्र में अपना करियर विकसित किया। अनुप्रिया ने विद्यालय में उसकी प्रतिभा को निखारने में किए गए प्रयासों को कामयाबी का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। 12वीं में उसे 92.6 प्रतिशत अंक मिले थे। उसने अपने जूनियर्स को आत्मविश्वास के साथ चुनौतियों का डटकर सामना करने का संदेश दिया।

जीजीईएसटी के आसिफ को एनईटी में सफलता

निदेशक ने दी बधाई

संवाददाता
बोकारो : गुरु गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसायटीज टेक्निकल कैंपस, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट, एप्लिकेशन एवं फैशन कॉलेज, बोकारो के एमबीए विभाग के मेधावी छात्र आसिफ जैदी ने राष्ट्रीय स्तर की एनईटी/नेट परीक्षा को उत्तीर्ण कर अपने परिवार व कॉलेज को गौरवान्वित किया है। कॉलेज निदेशक डा. प्रियदर्शी जरूहार ने आसिफ जैदी की उपलब्धि पर उन्हें बधाई दी तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। निदेशक श्री जारुहार ने बताया कि वे हर क्षेत्र में सक्रिय और सकारात्मक बने रहने वाले एक होनहार छात्र हैं, जिन पर कॉलेज फख्र करता है। ज्ञात हो कि गत वर्ष से गुरु गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसायटीज टेक्निकल कैंपस कॉलेज में बीबीए और बीसीए के कोर्स प्रारंभ हुए हैं। साथ ही, इस वर्ष तीन नये कोर्स, बीटेक कंप्यूटर साईंस - साईबर सिक्योरिटी तथा डेटा साईंस एवं बी. टेक. इन फैशन टेक्नोलॉजी आरंभ हुए हैं। एमबीए विभागाध्यक्ष प्रो. विकास जैन तथा अन्य प्राध्यापकों ने आसिफ जैदी को बधाई दी। संस्थान अध्यक्ष तरसेम सिंह तथा सचिव सुरेंद्र पाल सिंह ने बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

सामाजिक दायित्वों के प्रति डीवीसी हमेशा तत्पर : पांडेय

शुभारंभ : सीएसआर के तहत तेलो शिशु विद्या मंदिर में स्मार्ट क्लास का शुभारंभ

संवाददाता

चन्द्रपुरा : चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र के वरिष्ठ महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने तेलो स्थित शिशु विद्या मंदिर में स्मार्ट क्लास का शुभारंभ किया। इस अवसर पर वरिष्ठ महाप्रबंधक सह-परियोजना प्रधान श्री पांडेय के स्वागत में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ। इस क्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने गीत एवं नृत्य की प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। संस्कृत के श्लोक आकर्षण के केंद्र रहे। स्मार्ट क्लास के शुभारंभ के बाद उपस्थित छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए परियोजना प्रधान श्री पांडेय ने कहा कि दामोदर घाटी निगम अपने सामाजिक दायित्व के प्रति हमेशा तत्पर है और परिक्षेत्र के विकास में अपना सहयोग देने में कभी पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा कि डीवीसी के निगमित सामाजिक दायित्व विभाग द्वारा ग्रामीणों के विकास हेतु संपूर्ण प्रयास किये जा रहे हैं। निगमित सामाजिक दायित्व के प्रबंधक पी के झा ने कहा कि निकट भविष्य में और विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की व्यवस्था बहुत जल्द ही की जाएगी। इस दौरान प्राचार्य द्वारा कुछ सुविधाओं की मांग की गई। परियोजना प्रधान श्री पांडेय ने बताया कि विद्यालय के विकास हेतु भरसक प्रयत्न किया जाएगा और उनकी मांगों पर गंभीरतापूर्वक विचार करेंगे और पूरा भी करेंगे। इस अवसर पर विद्यालय के मेधावी छात्र-छात्राओं को परियोजना प्रधान द्वारा मोमेंटो एवं प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि तेलो के सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के 9 छात्र जिले के टॉप 10 छात्रों में रहे हैं। इन छात्रों को जिले के उपायुक्त ने भी सम्मानित किया है। वे छात्र, जिन्होंने 90% से ज्यादा अंक लाये हैं, उन्हें परियोजना प्रधान द्वारा इस अवसर पर सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के अलावा जिला परिषद सदस्य अजय महतो, प्रफुल्ल भंडारी, विद्यालय के शिक्षक सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

सेवानिवृत्त कर्मियों की समस्याओं को ले गोलबंद हुआ पेंशनर कल्याण समाज

संवाददाता

बोकारो : झारखंड पेशनर कल्याण समाज का शिष्टमंडल उपायुक्त बोकारो से मिला। पेंशनर कल्याण समाज के सुचारू रूप से कार्य एवं सभी सेवानिवृत्त कर्मियों की समस्याओं के संबंध में विचार-विमर्श करने के लिए एक कार्यालय आवंटन करने हेतु मांग पत्र सौंपा गया। उपायुक्त को मांग-पत्र सौंपते हुए आग्रह किया गया कि कार्यालय आवंटन हेतु तीन बार पत्र कार्यालय में भेजा गया है एवं ओएसडी से मिलकर कार्यालय आवंटन हेतु आग्रह किया गया एवं कई खाली आवास को भी नंबर देकर उसे आवंटन करने का आग्रह किया गया, लेकिन ओएएसडी द्वारा आज तक कोई सहायता नहीं की गई। खाली आवास को आवंटित नहीं करवाया गया, जबकि सात लोगों को आवास आवंटन भी कार्यालय से एक सप्ताह पूर्व निर्गत भी किया गया, जिसमें मुद्रा मोचन की चर्चा हो रही है। आवास आवंटन की प्रक्रिया में काफी खामियां पाई गई हैं। पेंशनर कल्याण समाज ने उपायुक्त से संगठन के सुचारू कार्य तथा

सेवानिवृत्त कर्मचारियों की हर सुविधा उपलब्ध कराने, वरिष्ठ नागरिक जो आने-जाने से भी लाचार हैं, उनकी समस्याएं दूर कराने की मांग की है। संघीय शिष्टमंडल में मुख्य संरक्षक बाल कृष्ण कुमार, अध्यक्ष वाल्मीकि प्रसाद सिंह, जिला महामंत्री विजय कुमार महतो, संरक्षक ललित कुमार सिन्हा, संयुक्त सचिव अरविंद कुमार, कोषाध्यक्ष अशोक कुमार करण, मिथिलेश, भोला आदि रहे।

बदलाव धूमधाम से मना रोटरी का स्थापना दिवस, नई टीम ने पदभार संभाला

118 वर्षों से जरूरतमंदों के चेहरों पर मुस्कान बिखेर रहा रोटरी : जोगेश गंभीर

संवाददाता

बोकारो : रोटरी क्लब ऑफ बोकारो स्टील सिटी के सेक्टर- 4 स्थित रोटरी प्ले ग्रुप परिसर के पॉल हैरिस सभागार में रविवार को क्लब का 55वां स्थापना दिवस सोल्लास मनाया गय। इसके साथ नए रोटरी सत्र 2023-24 की भी शुरूआत हुई। कार्यक्रम का प्रारंभ मुख्य अतिथि रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3250 के पूर्व गवर्नर जोगेश गंभीर, पूर्व गवर्नर महेश केजरीवाल, पूर्व गवर्नर संदीप नारंग, पूर्व गवर्नर राजन गंडोत्रा, पूर्व गवर्नर अजय छाबड़ा एवं क्लब की निवर्तमान अध्यक्ष निरुपमा सिंह, वर्तमान अध्यक्ष घनश्याम दास और सचिव महेश कुमार गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं श्रीमोई द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुख्य अतिथि रोटेरियन गंभीर ने कहा कि रोटरी पूरी दुनिया में 118 वर्षों से सेवा की मिसाल पेश कर रहा है। उन्होंने कहा कि रोटरी एक ऐसी संस्था है, जिसका कोई मुकाबला नहीं। उन्होंने बोकारो रोटरी की नई टीम के इस साल और बेहतर करने की आशा जताई। इसके पूर्व दिवंगत वरिष्ठ रोटेरियन सुरेंदर सिंह साहनी को याद कर उन्हें नमन किया गया।

निवर्तमान अध्यक्ष निरुपमा सिंह ने आने वाले समय में नवनिर्वाचित टीम द्वारा रोटरी क्लब को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने की शुभकामनाएं दीं। इसके बाद निवर्तमान सचिव घनश्याम दास ने सत्र 2022-23 की उपलब्धियों एवं सेवाकार्यों पर विस्तृत प्रकाश डाला। इसके बाद मुख्य अतिथि जोगेश गंभीर ने पुरानी एवं नई टीम के बीच विधिपूर्वक कॉलर एक्सचेंज कार्यक्रम संपन्न कराया। इसके उपरान्त सत्र 2023-24 के अध्यक्ष घनश्याम दास ने सभा को सम्बोधित करते हुए अपने कार्यकाल में प्रस्तावित सेवाकार्यों पर प्रकाश डाला और भावी योजनाओं को साझा किया। चार नए सदस्यों को शपथ दिलाई गई। इस क्रम में क्लब द्वारा प्रकाशित स्मारिका का भी मुख्य अतिथि द्वारा विमोचन किया गया। अंत में संजय तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन चंद्रिमा रे ने किया।

हफ्ते की हलचल

वैष्णो देवी के दर्शन को श्रद्धालुओं का जत्था रवाना

बोकारो : जिले के बेरमो अनुमंडल अंतर्गत जरीडीह बाजार झंडा चौक स्थित हनुमान मंदिर के प्रांगण से 61 श्रद्धालुओं का जत्था माता वैष्णो देवी के दर्शन को रवाना हुआ। अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष सह झामुमो नेता अनिल अग्रवाल ने मां वैष्णो देवी दर्शन हेतु श्रद्धालुओं के जत्थे को जम्मू के लिए रवाना किया। उन्होंने कहा कि अपने परिजनों के सहयोग से वे अपने निजी मद से प्रतिवर्ष मां वैष्णो देवी की यात्रा दर्शन के लिए वैष्णो देवी के लिए भेजते हैं। इनमें खासकर वैसे लोगों को चिन्हित करते हैं, जो आर्थिक रूप से कमजोर या खुद से माता वैष्णो देवी का दर्शन करने में सक्षम नहीं है। इसका नेतृत्व उनके अग्रज सौरभ अग्रवाल करते हैं। यह सिलसिला पिछले 14 वर्षों से चलता आ रहा है। आगे भी जारी रहेगा।

ईडी बने सीजीएम पोपली किए गए सम्मानित

बोकारो : गुड मार्निंग क्लब की ओर से बोकारो क्लब परिसर में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अधिशासी निदेशक में प्रोन्नत हुए बोकारो स्टील प्लांट के सीजीएम भूपिन्दर सिंह पोपली को सम्मानित किया गया। क्लब के अध्यक्ष कुमार अमरदीप ने कहा कि श्री पोपली ने नगर को स्वच्छ व सुंदर बनाने को लेकर सकारात्मक काम किया। बोकारो इस्पात नगर में सड़क, स्ट्रीट लाइट आदि को दुरुस्त किया गया। नगर की आवासीय कालोनियों की नालियों की भी मरम्मत कराई जा रही है। बीएसएल की ओर से संचालित विद्यालय भवन का जीर्णोद्धार कराया गया। सोवियत क्लब को विकसित किया जा रहा है। पूरे नगर में विकास कार्य को तीव्र गति से धरातल पर उतारा गया। इन्हें सेल कारपोरेट के अधिशासी निदेशक पद पर प्रोन्नत किया गया है। अपने अनुभव व कार्यशैली से सेल के विकास में अहम भूमिका निभाएंगे। मौके पर आलोक रस्तोगी, संजय श्रीवास्तव, राजकपूर चौधरी, विमल जैन, बड़े लाल, विपिन अग्रवाल, राजुल, मदन मन्नू श्रीवास्तव, चुनाल, आदि मौजूद रहे।

गोमिया में रेलवे ओवरब्रिज बनाने को ले सौंपा ज्ञापन

गोमिया : विस्थापित संघर्ष समिति, गोमिया का एक प्रतिनिधिमंडल पूर्व मध्य रेलवे के उप मुख्य अभियंता कुणाल से मिलकर उन्हें मांग पत्र सौंपा। मांग पत्र सौंपते हुए विस्थापित संघर्ष समिति के सचिव राकेश कुमार ने कहा कि गोमिया में रेलवे ओवरब्रिज गोमिया की जनता की वर्षों पुरानी मांग थी। पिछले दिनों अखबार के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त हुई कि विभागीय अनुमति उक्त रेलवे ओवरब्रिज के निर्माण के लिए मिल चुकी है। इसके बाद गोमिया के लोगों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी थी। लेकिन, लगभग छह माह बीत जाने के बावजूद आज तक गोमिया में रेलवे ओवरब्रिज का निर्माण शुरू नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि रेलवे ओवरब्रिज के निर्माण कार्य की शुरूआत में विलंब होने से यहां के लोगों में भारी निराशा है, क्योंकि यह ओवरब्रिज यहां के लोगों की भावनाओं से जुड़ा हुआ है। उन्होंने उप मुख्य अभियंता से ओवर ब्रिज का निर्माण कार्य अविलंब शुरू करने की मांग की। अन्यथा आने वाले दिनों में आंदोलन की भी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि इस रेलवे ओवरब्रिज के निर्माण में जिन रैयतों की जमीन जा रही है, उनका उचित मुआवजा मिले, इसका प्रयास पूर्व मध्य रेलवे को करना चाहिए। प्रतिनिधिमंडल में विस्थापित संघर्ष समिति के अध्यक्ष विनय महतो, सचिव राकेश कुमार, गणेश कुमार सीटू, ईश्वर महतो, उपाध्यक्ष मुकेश कुमार, चमन प्रजापति, सह सचिव अश्विनी कुमार, कोषाध्यक्ष सूरज कुमार शामिल थे।

बोकारो थर्मल में हरियाली सावन महोत्सव का आयोजन

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल स्थित आवासीय कॉलोनी के आवास संख्या ई-13ए में स्थानीय कॉलोनी की महिलाओं की संस्था ब्यूटी क्वीन ग्रुप के द्वारा सावन महोत्सव का आयोजन किया गया। महोत्सव का उद्घाटन शीतल प्रसाद, अंजली सिन्हा, अंजाना कुमारी ने संयुक्त रूप से किया। इस आयोजन में पूरी कॉलोनी के अलग-अलग क्षेत्रों से बड़ी संख्या में डीवीसी कर्मी की महिलाएं शामिल हुईं। महोत्सव का आरंभ गणेश वंदना के साथ हुआ। अंजली सिन्हा, शीतल प्रसाद, पम्मी कुमारी ने समारोह में महिला शक्ति पर स्वागत भाषण देकर सभी महिलाओं का हौसला बढ़ाया एवं सभी को इस आयोजन के लिए बधाई भी दी। आयोजन में महिलाओं के द्वारा सोलो डांस, ग्रुप डांस, रैम्प वाक, क्विज, म्यूजिकल चेयर, मेहंदी जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समारोह में तमाम महिलाएं हरी साड़ी एवं हरी चूड़ियों से सुसज्जित होकर शामिल हुईं थीं। समारोह में शीतल प्रसाद, रश्मि, श्रावणी, संतोष, गुड़िया, बॉबी, शालिनी श्रीवास्तव, अंजली सिन्हा, पम्मी कुमारी सहित कई महिलाएं शामिल थीं।

अनियमितता के अंधेरे में लाइट हाउस योजना

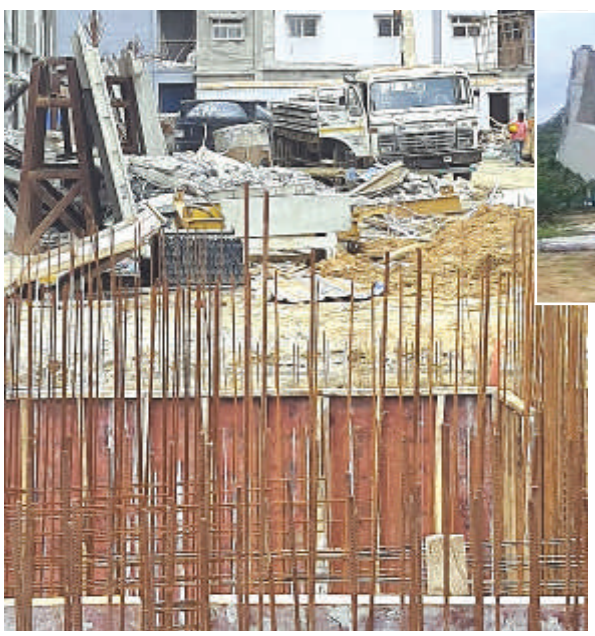

देवेंद्र शर्मा

रांची : गरीबों को सस्ते दर पर आवास उपलब्ध कराने की केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना लाइट हाउस को उस समय राजधानी रांची के एचईसी आवासीय परिसर में जबरदस्त आघात लगा, जब चार दिन पहले निर्माणाधीन भवन का एक बड़ा भाग बारिश की पहली फुहार में ही भरभराकर धराशायी हो गया। चर्चा है कि इस घटना में निर्माण-कार्य में कुछ श्रमिकों की मौत भी हो गई। हालांकि, कंपनी ने इससे साफ इनकार किया है। बताया जाता है कि भवन का हिस्सा गिरने से तेज आवाज के कारण लोगों की भीड़ जुटी, परन्तु सुरक्षाबल के जवानों ने आमलोगों को परिसर में घुसने नहीं दिया। खबर लिखे जाने तक निर्माण-कार्य बन्द पड़ा था। कोई भी इस घटना की जिम्मेवारी नहीं लेना चाह रहा।

घटिया सामान का कर रहे इस्तेमाल

कम्पनी के एक अभियंता ने अपना नाम न छापने की शर्त पर बताया कि लाइट हाउस के निर्माण में घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसने पूरे भवन के निर्माण पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। उन्होंने कहा कि जो निर्माण-कार्य किए गए हैं, उनकी अगर जांच कराई जाय तो मामला चौंकाने वाला सामने आयेगा और भवन को ही ध्वस्त करना पड़ सकता है। इसलिए कम्पनी जैसे-तैसे काम को खत्म कर हटना चाह रही है।

नगर निगम के जरिए हो रहा काम

विदित हो कि इस योजना को केन्द्र सरकार नगर निगम के माध्यम से पूरा करा रही है। 1 जनवरी 2021 को स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऑनलाइन इस योजना की आधारशिला रखी थी। स्थानीय विधायक और सांसद योजना का गुणगान जमकर कर रहे थे और उपलब्धियों का रोज बखान कर रहे थे, परन्तु भवन के एक भाग का हिस्सा जिस दिन गिरा, सबकी बोलती बन्द हो गई।

एक-एक फ्लैट बनाकर क्रेन से चढ़ाया जा रहा, लोगों ने कहा- नहीं झेल पाएगा भूकंप

भवन का निर्माण फ्लैट सिस्टम में किया जा रहा है। एक-एक फ्लैट का निर्माण कर उसे क्रेन के माध्यम से एक पर एक सेट किया जा रहा है। लोगों का कहना है कि जिस प्रकार निर्माण किया जा रहा है, उससे भूकम्प के हल्के झटके को भी भवन बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। इस प्रकार की घटना ने गरीबों के सपने को कम्पनी की निम्न गुणवत्ता के निर्माण ने मिट्टी में मिला दिया। निर्माण का जिम्मा मेसर्स एसजीसी मैजिक क्रिट एलएलपी को दिया गया है। घटना के बाद कम्पनी के कुछ अभियंता भूमिगत हो गये हैं। लोगों को योजना परिसर में घुसने की मनाही है। पत्रकार और छायाकार पर प्रतिबंध सख्त है, जो इस बात को प्रमाणित करता है कि गड़बड़ी बड़े पैमाने पर घपलेबाजी हुई है। राज्य सरकार या स्थानीय जिला प्रशासन की चुप्पी भी लोगों के लिए चिन्ता का विषय है। निर्माण-कार्य दो ब्लॉक में पास हो गया है। एक निर्माणाधीन है। आरोप है कि लाइट हाउस के निर्माण के पहले आठ मंजिला भवन की नींव और क्षेत्र की मिट्टी की जांच नहीं की गई थी। निर्माण सामग्री में प्रयुक्त लोहा और सीमेंट के व्यवहार की जांच भी नहीं की गई। निर्माण के प्रारम्भ में जो कार्य किए जा रहे थे, वो रात्रि के समय क्यों हो रहे थे, वह बड़ा सवाल है।

पूंजी लगाने वाले लोग चिंतित, निबंधन-वापसी की गुहार

इधर, उक्त घटना के बाद परिसर के चारों ओर सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। गरीब और मध्यम श्रेणी के लोग, जिन्होंने एक-एक पैसा बचाकर आशियाना का स्वप्न देखा था और मोटी राशि निबंधन के नाम पर रांची नगर निगम में जमा करायी थी, उनकी चिंता बढ़ गई है। वे बेचैन हैं। सैकड़ों की संख्या में वे निगम कार्यालय पहुंचकर अपना निबंधन- वापसी के लिए गुहार लगा रहे हैं। भवन 3 डी आकार में बनाये जा रहे हैं। आठ मंजिल के इस भवन में कुल 1008 वन बीएचके का निर्माण हो रहा है। लाभुक से निबंधन और भवन की कीमत सात लाख रुपये वसूले गये हैं।

झारखंड में जान-माल सुरक्षित नहीं : चंद्रप्रकाश

बोकारो : गिरिडीह के सांसद चन्द्र प्रकाश चौधरी ने पूर्वी टुंडी थाना क्षेत्र स्थित मायरा नामाटांड दुमा गांव के रहने वाले शंकर दे की हत्या की कड़ी निंदा की है। आरएसएस से जुड़े शंकर दे ग्राम रक्षा दल के सदस्य, धनबाद जिला वनवासी कल्याण केन्द्र के जिला कार्य प्रमुख थे। शंकर दे की बीती रात शहरपुरा जाने के दौरान दुमा कब्रिस्तान के पास अज्ञात अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। उन्होंने कहा कि राज्य में कानून-व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है। यहां किसी का जान और माल सुरक्षित नहीं है। अपराधी बेलगाम हो गए हैं। अपराधियों को पुलिस का तनिक भी भय नहीं है। अपराधी दिनदहाड़े अपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि कानून-व्यवस्था का यह आलम है कि कोयला चोरी खुलेआम हो रही है। खनिज की लूट मची है। संबंधित थाना क्षेत्र उदासीन बना हुआ है। लोग भय के वातावरण में जीने को विवश हैं। महिलाएं असुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि इस घटना से से लोगों में आक्रोश है। उन्होंने अपराधियों की अविलंब गिरफ्तारी की मांग की है।

भूखे-प्यासे रहकर साजिशन जेल भेजे जाने का कर रहे प्रतिकार

जनहित में आंदोलन करने पर गिरफ्तार किए गए थे पूर्व जिप उपाध्यक्ष संतोष

विशेष संवाददाता

देवघर : माइनिंग हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों को मुआवजे की मांग को लेकर आंदोलन करने पर गिरफ्तार किए गए देवघर के पूर्व जिला परिषद उपाध्यक्ष संतोष पासवान लगातार अनशन पर हैं। झूठे मुकदमे में केंद्रीय कारा भेजे जाने का आरोप लगाते हुए संतोष लगातार भूखे-प्यासे रहकर अपना प्रतिकार जता रहे हैं। मजदूरों के अधिकार को लेकर लगातार आंदोलनरत हैं, परंतु अब तक किसी भी अधिकारी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी है। एक पखवाड़े से संतोष जेल में आमरण अनशन पर बैठे हुए हैं, लेकिन खबर लिखे जाने तक किसी ने भी उनकी सुध नहीं ली। उनकी तबीयत भी बिगड़ती चली जा रही है। कुछ दिन पहले जेल अधीक्षक को इसकी जानकारी होने पर संतोष को इलाज के लिए कड़ी सुरक्षा के बीच सदर अस्पताल भेज दिया। ऑन ड्यूटी डॉक्टर रवि कुमार ने बीपी, पल्स इत्यादि जांच करने के पश्चात प्राथमिक उपचार कर वार्ड में भर्ती कर दिया था।

वहीं, संतोष ने बताया कि साजिश के तहत उन्हें फंसाया गया है। जब तक मांग पूरी नहीं होगी, उनका अनशन जारी रहेगा। इस क्रम में अगर उन्हें कुछ होता है, तो जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन जिम्मेदार होगा। मांग पूरी होने व पूरे मामले की जांच-पड़ताल नहीं होने तक संघर्ष जारी रखेंगे। जसीडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत एमपी माइनिंग में हादसे के बाद मृतक के परिजनों को सरकारी प्रावधान के तहत मुआवजा व अन्य मांगों को लेकर परिजनों के साथ धरना-प्रदर्शन किया गया था। अधिकारी के बयान पर संतोष के खिलाफ लोगों को उग्र करने, उकसाने व अशांति फैलाने के अलावे सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने, पथराव करने का आरोप लगा गिरफ्तार कर न्यायालय के आदेश पर जेल भेज दिया गया था। संतोष की गिरफ्तारी के खिलाफ धीरे-धीरे लोगों में आक्रोश बढ़ता चला जा रहा है। सोशल मीडिया से लेकर धरातल तक लोग इसका विरोध कर रहे हैं।

'साहित्य सम्मेलन आनंदोत्सव' 30 को

सम्मेलन शिरोमणि, सम्मेलन-चूड़ामणि, सम्मेलन-रत्न, कला-रत्न अलंकरणों से सम्मानित होंगे साहित्यकार

संवाददाता

पटना : सम्मेलन के 42वें महाधिवेशन की व्यापक सफलता के उपलक्ष्य में आगामी 30 जुलाई को, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में 'आनंदोत्सव' का आयोजन किया जाएगा, जिसमें महाधिवेशन में मूल्यवान योगदान करने वाले विदुषी कवयित्रियों और मनीषी साहित्यकारों के साथ सम्मेलन-कर्मियों को 'सम्मेलन-शिरोमणि', 'सम्मेलन चूड़ामणि', 'सम्मेलन-रत्न', 'कला-रत्न' एवं 'सम्मेलन-सेवी' अलंकरणों से विभूषित किया जाएगा।

यह जानकारी देते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने बताया है कि आनंदोत्सव में सम्मान-समारोह के अतिरिक्त एक भव्य कवि-सम्मेलन, कजरी-उत्सव और गीत-नृत्य-संगीत के साथ सहभोज का आयोजन किया जाएगा। सम्मान हेतु हैदराबाद से अंग-वस्त्रम मंगाये जा रहे हैं। समारोह में गत महाधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष डा रवींद्र किशोर सिन्हा समेत सम्मेलन की कार्यसमिति और स्वागत समिति के सभी अधिकारी एवं सदस्यगण तथा आमंत्रित अतिथि भाग लेंगे। विशिष्ट-अतिथियों की भी सूची बनायी जा रही है।

पीके की चुनौती- नीतीश ने एक भी गांव में अगर काम किया, तो दिखा दें

विशेष संवाददाता

मिथिला डायरी

समस्तीपुर : चुनावी व राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर (पीके) ने एक बार फिर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधा है। समस्तीपुर में अपनी जनसुराज पदयात्रा के दौरान उन्होंने नीतीश कुमार को खुली चुनौती दी। कहा कि नीतीश ने कहीं भी विकास नहीं किया। यदि नीतीश कुमार को लगता है कि उन्होंने काम किया है तो किसी भी एक गांव या पंचायत में बिना किसी सुरक्षा के घूमकर दिखा दें। प्रशांत किशोर ने कहा कि हम पदयात्रा इसलिए कर रहे हैं, ताकि बिहार के लोगों से मिलें और बिहार को समझ सकें और फिर उसके बाद रोडमैप तैयार कर सकें। जब ये नहीं पता होगा कि पंचायत में समस्या क्या है? तो उसका समाधान कैसे होगा। वहीं, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर बुधवार को कुर्सी उछाले जाने की घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि मैंने बहुत पहले ही कहा था और आप मेरे पुराने बयान भी उठा कर सुन सकते हैं कि नीतीश कुमार कोई भी पब्लिक कार्यक्रम करेंगे तो उसमें इस तरह की अप्रिय घटना घटित होंगी।

तेजस्वी को घेरा

बिहार में रोजगार को लेकर भी प्रशांत किशोर लगातार सवाल उठा रहे हैं। समस्तीपुर में उन्होंने शिक्षक अभ्यर्थियों के मुद्दे पर महागठबंधन सरकार को घेरा। जन सुराज पदयात्रा के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने तेजस्वी यादव पर हमला करते हुए कहा कि बिहार के वह नेता जो मंच पर खड़े होकर ये दावा करता है कि मैं आपको 10 लाख नौकरियां दे दूंगा, तो वो आपको रोडमैप लगता है, लेकिन सत्ता में आने के बाद वो आपके ऊपर डाकबंगला चौराहे पर लाठियां चलवा रहा है तो इसमें बिहार की जनता की गलती है। जो 15 सालों से सत्ता में होने के बाद आपको एक नौकरी नहीं दे पा रहा है और वो आकर कह रहा है कि मैं आपको 15 लाख नौकरी दे दूंगा, तो उनसे ये पूछना चाहिए कि कैसे देंगे? अगर आप दे सकते थे तो पहले क्यों नहीं दिए?

लोगों में सरकार को लेकर नाराजगी

पीके ने आगे कहा कि जब जनता में इतनी उदासीनता है, इतना गुस्सा है तो जब आप जमीन पर जाएंगे तो लोग शोर मचाएंगे ही और यदि आप सोचते हैं कि इनको सुरक्षा के बल पर दबाया जा सकता है, तो यह गलतफहमी है। जनता जब नाराज होगी तो कुर्सी चलाएगी ही, कोई झंडा फाड़ेगा, कोई रोड पर लेटेगा। ऐसा केवल एक जिले में नहीं हो रहा है। यह पूरे बिहार में हो रहा है। क्योंकि लोगों में सरकार को लेकर नाराजगी है।

मन को सरस करना ही शिवलिंग-अभिषेक का उद्देश्य

शिव अभिषेक का महीना श्रावण मास

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

श्रावण मास
4 जुलाई से 17 जुलाई 2023
17 अगस्त से 31 अगस्त 2023

शिवो गुरुः शिवो देवः शिवो बन्धुः शरीरिणाम्
शिव आत्मा शिवो जीवः शिवादन्यत्र किंचन।।
शिवमुद्दिश्य यत्किञ्चिद दत्तं जप्तं हुतं कृतम्
तदन्तफलं प्रोक्तं सर्वागमविनिश्चितम्।।

भगवान शिव गुरु हैं, शिव देवता हैं और शिव ही इस शरीर के मित्र हैं, जिनका स्पष्ट प्रमाण उनका महामृत्युंजय स्वरूप है। शिव ही आत्मा हैं, शिव ही जीवन हैं और शिव से भिन्न कुछ भी नहीं है। अतएव शिव के निमित्त जो भी दान, जप और होम किया जाता है, उसका फल अनन्त है।

अभिषेक प्रिय शिव

शिवलिंग अभिषेक प्रतीक है। परंतु इसमें गहन अर्थ छिपा है। शिव अभिषेक का अर्थ शिवलिंग पर जल सींचना समझा है तो आप उसके वास्तविक अर्थ को समझने से चूक रहे हैं। शिवलिंग पर अर्पित जल, दुग्ध, दही गंगाजल, मधु और घी सिर्फ शिव के बाहरी रूप का अभिषेक नहीं है, बल्कि उनके उस स्वरूप को भी सिंचित करना है, जो हमारे अंदर है, जिसकी अभिव्यक्ति शिवोऽहम...है।

लीयमानमिदं सर्व ब्रह्मण्येव हि लीयते

लिंग परमानंद का कारण है, जिससे क्रमशः ज्योति और प्रणव की उत्पत्ति हुई है। शिवलिंग का ही सूक्ष्म स्वरूप शिव पंचाक्षर मंत्र है और हमारे अंदर शिव विराजमान हैं, इस सत्य से जो अवगत हो जाता है, उसके अंदर ज्ञान की ज्योति स्वयं प्रज्वलित हो जाती है।

जहां शिव हैं, वहां सत्य है। जहां सत्य है, वहां अमरत्व है। इस अमरत्व को सदाशिव ने ही तो सत्यापित किया है। तभी तो बम-बम भोले के जयघोष से हमारा आंतरिक मन पावन हो उठता है और परम पावनी गंगा की शाश्वत जलधारा से प्रच्छालित होकर निर्विकार मन शिवालय बनने का सामर्थ्य पा लेता है।

शिव को समझना, शिव को अपने भीतर जागृत करना, शिवत्व को सक्रिय करना जीवन का उद्देश्य है।

उनकी पूजा में अभिषेक का विशेष स्थान है। अभिषेक का शाब्दिक अर्थ सींचना है। सींचने का अर्थ पोषण है, जो मन, प्राण को तुष्ट करता है। इसलिए अभिषेक में पुष्टिकारक द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है, जैसे- दूध, दही, घी, मधु एवं जल, जो सुगन्धि एवं आरोग्य प्रदान करें।

सुगन्धि का अर्थ यहां प्रेम और आनन्द है। काम का भाव है सृजन। समस्त सृष्टि में सृजन शिव और शक्ति के संयोग का परिणाम है। शक्ति का शिव के आधे भाग पर आधिपत्य है। श्रृंगार रस या प्रेम का सृजन शिव और शक्ति के इस मिलन से आरंभ होता है, जिसका प्रतीक शिवलिंग है।

शिवलिंग का अभिषेक आनंद भाव को सींचना है। 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के भाव को प्रखर करना है, वह सच्चिदानन्द परम शिव आनंद भाव में मुखर होता है और उस अलौकिक आनन्द प्राप्त करने की पहली कड़ी शिवलिंग अभिषेक है।

तन को दूध, दही, घी, मधु पुष्ट करते हैं और मनुष्य अपने मन में बसे शिव को इन्हीं द्रव्यों से सींचता है, इस आशा में कि वे उनकी कामनाओं को सार्थक करें। काम और कामनाएं दोनों साकार होती हैं उस शिव के द्वार पर।

श्रावण सोमवार - शिवाभिषेक

श्रावण महीने में शिव अभिषेक का विशेष महत्व है। मान्यता है कि श्रावण के माह में ही भगवान शिव पृथ्वी पर अवतरित हुए और अपने ससुराल पहुंचे थे। ससुराल में शिव का स्वागत अर्घ्य और जलाभिषेक से किया गया। यही वजह है कि श्रावण माह में शिव को अर्घ्य और जलाभिषेक किया जाता है। शिवलिंग अभिषेक का गहन अर्थ उस ऊर्जा को सक्रिय करता है, जो हर जीव में उसकी आत्मा की ज्योति है। शिव का भाव कल्याण का भाव है। जगत के कल्याण के लिए जो शांत भाव से विष पी लें, वे शिव हैं।

शिव का अभिषेक बाह्यक्रिया नहीं है, जहां देवता को धूप-दीप, नैवेद्य दिखा दिया गया। अभिषेक प्रतीक है। वास्तव में अपने मन को सरस करना ही शिवलिंग अभिषेक का उद्देश्य है और मन को सरसता, आनन्द एवं ऊर्जा आत्मा से प्राप्त होती है। मनुष्य में आत्मा शिव का रूप है।

निराकार ओंकार मूलम तुरीयं
गिराग्यान गोतीत मीशं गिरीशं

शिव सृष्टि को नियंत्रित करने वाली सकता हैं और जैसी दृष्टि होती है, वैसी ही सृष्टि उस व्यक्ति के लिए होती है। इसलिए जैसे आप, आपके लिए वैसे ही हैं आपके महादेव। शिव स्वयं भू हैं, अजन्मा, न तो उनका आदि है और न ही अंत। इसलिए शिव की लिंग रूप में पूजा होती है।

शिव का साक्षात स्वरूप : शिवलिंग

शिव पुराण में वर्णित है कि शिव परम ब्रह्म हैं। वेद में परमात्मा की कल्पना एक विशाल ऊर्जा स्तंभ के रूप में की गई है, जिसका ओ-छोर ढूंढने ब्रह्मा और विष्णु निकले, परंतु ढूंढ़ नहीं पाये। हारकर वे उस ऊर्जा स्तंभ के समक्ष नतमस्तक हो जाते हैं, जो शिवलिंग का प्रतीक है।

शिवलिंग का अभिषेक वस्तुतः समस्त देवी देवताओं का अभिषेक है, क्योंकि शिवलिंग के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और ऊपर महादेव स्थित हैं। शिवलिंग का पूजन परब्रह्म का पूजन है। साथ ही साथ, साधक शरीर के मन, प्राण का भी पूजन, क्योंकि उसमें भी उसी ब्रह्म परमात्मा का निवास है। वेदों में **'अहम् ब्रह्मास्मि'** के सिद्धान्त के पीछे मूल भाव यही है।

ऋग्वेद के श्लोक 10:129 में वर्णन आया है कि सृष्टि के आरंभ में जब कुछ भी नहीं था, तब भी शिव थे। क्योंकि यह सृष्टि शिवमय ही है। वैसे भी शिव शून्य हैं। उनमें प्रकाश और अंधकार का चरम बिन्दु विलय कर जाता है। ऐसा किसी अन्य देव में नहीं होता है। शिव संसार के पहले गुरु है, मंत्रों के रचयिता हैं, जो भांग का सेवन भी करते हैं, गांजे का चिलम लगाकर शिव धूनी रमा सकते हैं, तो योगियों में अगर कोई श्रेष्ठ हैं, तो वे शिव ही हैं। शिव पूर्ण हैं और जो भी पूर्ण होगा, उसमें सम भाव आ जाता है। जहां सम दृष्टि होती है, वहां बाल मन आ जाता है। उसे इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि साधक रावण है, या देवता। उसके लिए वह सिर्फ साधक है और शिव को अपने साधकों की कामना पूर्ति हेतु तथास्तु कहना आता है। जय हो शंभु, शिवोऽम...शिवोऽहम...शिवोऽहम......।

लिङ्ग मर्थ हि पुरुषं गमयतीत्पदः
शिव शक्तयोच चिन्हस्य मेलन लिङ्गमुच्यते

अर्थात शिव और शक्ति का मिलन शिवलिंग है। शिवलिंग में आधार (वेदी) भगवती उमा हैं और लिंग साक्षात महेश्वर हैं। शिवलिंग का अभिषेक वस्तुतः शक्ति एवं शिव का अभिषेक है। लिंग पुराण में स्पष्ट किया गया है कि इस संसार में समस्त पुरुष तत्व शिव को निरूपित करते हैं और प्रत्येक स्त्री शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। जब भी उमा और महेश्वर का संयोग होता है, उस समय सृजन सक्रिय होता है। यह सारा विश्व शिव से ही उत्पन्न है, शिव में ही स्थित है और शिव ही में विलीन होता है। विविध कार्यों के लिए शिव ही ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र का रूप धरते हैं।

मूले ब्रह्मा वसति भगवान् मध्यभागे च विष्णुः
सवेशार्नः पशुपतिरजो रुद्रमुर्त्तिवरेण्यः

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

बॉडी चाहिए हट्टे-कट्टे तो जरूर खाएं भुट्टे, जानिए फायदे

आयुर्वेद में भुट्टे या मक्के के कई फायदे बताए गए हैं। आइए जानते हैं-

- **डिप्थीरिया** से राहत दिलाने में भुट्टा का सेवन बहुत ही फायदेमंद है।

- अगर मौसम के बदलाव के कारण **खांसी** से परेशान है और कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है तो भुटटे से इसका इलाज किया जा सकता है। भुने मक्के का सेवन करने से खाँसी से राहत मिलती है।

- **पाइल्स** या बवासीर में मक्के का घरेलू उपाय बहुत ही फायदेमंद साबित होता है।

- **यकृत** (लिवर) को स्वस्थ रखने में भुट्टा फायदेमंद है। मक्के की वर्तिका (बत्ती) को पीसकर सेवन करने से यकृत तथा पाचन संबंधी बीमारी में लाभ होता है।

- किसी बीमारी के कारण यदि **मूत्राशय में सूजन** हुआ है तो मक्के के इस्तेमाल से जल्दी आराम मिलता है।

- **किडनी में पथरी** में भी भुट्टा फायदेमंद है।

- **टीबी** के कष्ट से राहत दिलाने में मक्का बहुत काम करता है।

- अगर हद से **ज्यादा ब्लीडिंग** हो रहा है तो मक्के का सेवन बहुत लाभकारी है।

- अगर लंबी बीमारी के कारण या पौष्टिकता की कमी के वजह से **कमजोरी** महसूस हो रही है तो मक्का का इस तरह से सेवन करने पर लाभ मिलता है।

- प्रस्तुति : शशि

1528 में आक्रांताओं ने ध्वस्त कर दिया था श्री राम जन्मभूमि पर बना मूल मंदिर

अनछुए पहलू- 2... कनाडा से आये वैज्ञानिकों ने 50 मशीनें लगवाकर खींची थीं जमीन के भीतर की सोनोग्राफिक तस्वीरें

चंपत राय

महासचिव
श्री राम जन्मभूमि ट्रस्ट,
अयोध्या।

राम मंदिर की अदालती लड़ाई में यह बड़ा सवाल था कि कैसे सिद्ध करोगे कि 1528 में वहां कोई मंदिर था। किताब में लिखा है, पर वो किताब को नहीं मानते। तब इसका उत्तर आया कि जब कोई चीज गिर जाती है, भूकंप के झटके में गिर गई, बारिश हुई, मकान ढ़ह गया, सरकार ने जेसीबी-बुलडोजर चलाया और गिरा दिया। जमीन के ऊपर की दीवार गिरती है, जमीन के नीचे? जमीन के नीचे की नींव नहीं उखड़ती। जमीन के नीचे जरूर कुछ न कुछ मिलता है। 1528 में गिराए गए मंदिर की नींव देखने 2003 में कैसे जमीन के नीचे जाएं, यह बड़ी चुनौती थी। एक विद्वान ने कहा, जमीन के नीचे की अल्ट्रासाउंड करवा लो, फोटोग्राफी करवाओ। हिंदुस्तान में जमीन के नीचे फोटोग्राफी करने की कोई तकनीक ही नहीं जानता था, तो कनाडा से साइंटिस्ट आये। कनाडा के विद्वानों ने 25-50 जगह अपनी मशीनें रखकर 16 से 20 फीट गहराई तक फोटो खींचीं। फोटो में जमीन में दूर-दूर तक भवन देखा गया। विदेशी विद्वानों ने कह दिया कि दूर-दूर तक भवन दिख रहा है। भारत सरकार को कहा गया- धीरे धीरे मिट्टी हटाओ। पुरातत्व विभाग और वैज्ञानिक तरीके से धीरे-धीरे जब हटाकर देखा गया, तो सब कुछ मिल गया। अंततः 1528 के बाद सिद्ध हो गई कि वहां मंदिर था। बाद में पता चला कि वैसी ठीक रचना है, जैसे शंकर जी के मंदिर की होती है। अंत में लिखा गया- यहां एक उत्तर भारतीय शैली का मंदिर था। 1950 की मुकदमेबाजी 2020 में बंद हुई। ...और ये हुआ कि हां... एक मंदिर था, जो तोड़ा गया। लेकिन, हरेक मुकदमे में अपील करने का अधिकार होता है, अपील हुई सर्वोच्च न्यायालय में। आप सोच सकते हैं कि 25000 पृष्ठों पर सारा रिकॉर्ड है। सर्वोच्च न्यायालय की कार्रवाई अंग्रेजी में होती है। हिन्दी में होती नहीं और यहां हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, भारतीय, फारसी, फ्रेंच इतनी भाषाओं में दस्तावेज था। इसका अंग्रेजी अनुवाद करना था। यह काम था सरकार का। एक पार्टी करती, तो दूसरी इसका विरोध करती। सरकार बचती रही। ईश्वर की कृपा रही... 2014 और उसके बाद योगीजी 2017... यह जिम्मेदारी भी उत्तर प्रदेश सरकार की। भगवा वस्त्रधारी मुख्यमंत्री बनकर आये। सरकार से पूछा गया, कौन करे अनुवाद? योगी जी के वकील ने कहा सरकार करेगी। चार से पांच महीने में ट्रांसलेशन हो गया। अदालत में प्रस्तुत हो गया।

किसी ने जजों को कह दिया कि अगर मामला बातचीत से, समझौते सुलझ जाए तो हो सकता है, आराम से हो जाएगा। अदालत ने सोचा, यह भी प्रयोग किया जाए। तीन जजों की एक कमेटी बनी। उसमें भी एक साधु, श्री श्री रविशंकर (आर्ट ऑफ लिविंग, बैंगलोर), एक हिन्दू वकील और एक मुसलमान वकील। तीनों ही दक्षिण भारतीय। साढ़े चार महीने तक सात बार आपस में आमने-सामने बैठाया गया और अंत में यह निष्कर्ष निकला कि वार्तालाप से कुछ नहीं होगा। जो कुछ होगा, अदालत में दस्तावेज के आधार पर ही होगा। अदालत का मार्ग फिर खुल गया। 6 अगस्त 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने पांच न्यायाधीशों की एक बेंच गठित की। उसमें भी एक मुस्लिम। 40 दिन तक लगभग साढ़े चार घंटे प्रतिदिन वे केवल एक मुकदमा सुनते रहे। 5 अगस्त से शुरू करके 16 अक्टूबर। 40 दिन लगभग 170 से 175 घंटे। 16 अक्टूबर की शाम को अदालत ने कहा- अब बस खत्म। हमें जो सुनना था, सुन लिया। अदालत

के सामने बोला नहीं जाता। सर्वोच्च अदालत थी। 16 अक्टूबर को निर्णय सुरक्षित हो गया। 8 नवंबर की रात को 10 बजे सूचना मिली कि कल सूचना निर्णय घोषित होगा। फैसला आया, दुनिया गदगद हो गई। अचंभित रह गई। पांचों वकीलों ने कहा- यहां हिंदुओं का मंदिर ही बना हुआ था। सर्वोच्च न्यायालय में यह नियम है कि जिस न्यायाधीश ने निर्णय लिखा, उनका नाम ऊपर लिखा जाता है। उसके बाद बाकी के न्यायाधीशों का हस्ताक्षर होता है। पांचों ने सबसे नीचे हस्ताक्षर किया और कहा कि उनकी सहमति रही। कोई यह नहीं बता सकता कि इस जज ने लिखा है, इसको गोली मार दो। न्यायाधीशों ने सरकार को कहा कि यह साढ़े चार सौ- पांच सौ साल की लड़ाई है। आप ही आगे बढ़िए, आप ही संस्थान बनाएं। लड़ाई थी एक बटा तीन एकड़ जमीन की। सरकार ने उस एक बटा तीन एकड़ की रक्षा के लिए 70 एकड़ को पुलिस के घेरे में ले रखा था और अंततः अदालत ने 70 एकड़ देने का आदेश दे दिया। आज वहां मंदिर बन रहा है। ***(अगले अंक में पढ़ें कैसा बन रहा मंदिर)***

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
ऐसे कई रहस्यों का घर
वन होता कई-कई फलकों पर
जंगल एक हमारा दीखे
जंगल एक तुम्हारा दीखे
सबका जंगल अलग-अलग है
समझें हमसब इसको अलग प्रकार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
सन सत् हैं, शिव हैं, सुन्दर हैं
हम सबके मन के अन्दर हैं
वन मुझमें हैं, मैं हूं वन में
वन का भाव समष्टि वाला
करे व्यक्ति से अहंकार-परिहार...जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

पेज- एक का शेष

बदलेंगे झारखंड की...

उपस्थिति जन समूह को अवगत कराया और उन्हें इन योजनाओं से जुड़ने को कहा।

पशुधन का मिलेगा बीमा : मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए लगातार काम कर रही है। मुख्यमंत्री पशुधन योजना इसी कड़ी का एक अहम हिस्सा है। इसके तहत लाभुकों को सरकार के द्वारा जो भी पशु दिया जाएगा, उसका अब इंश्योरेंस होगा, ताकि पशुओं की मौत पर लाभुकों को आर्थिक क्षति नहीं हो और वह आगे भी पशुपालन से जुड़े रहे।

मेरे पति का सपना हुआ पूरा : बेबी

मौके पर उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग की मंत्री बेबी देवी ने आमजनों को संबोधित किया। कहा कि पूर्व मंत्री स्व. जगरनाथ महतो जी के हर अधूरे सपने को पूर्ण करना है। नावाडीह में मॉडल डिग्री कालेज की स्थापना उनका सपना था, जिसे मुख्यमंत्री ने आज शिलान्यास कर पूरा करने का कार्य किया है। राज्य मंत्री दर्जा प्राप्त योगेंद्र प्रसाद महतो ने भी स्व. जगरनाथ के सपने साकार करने पर बल दिया और लोगों से उनके परिवार के साथ खड़ा होने की अपील की।

बोले डीसी- बोकारो जिले के लिए गौरव का क्षण : इस मौके पर उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि मुख्यमंत्री का आगमन बोकारो जिला की जनता एवं जिला प्रशासन के लिए हर्ष एवं गौरव का क्षण है। जिला मुख्यमंत्री श्री सोरेन के मार्गदर्शन में नित्य नई उपलब्धियों को अर्जित कर रहा है। जिला में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल एवं आधारभूत संरचना का विकास में तेजी से कार्य हो रहा है। जहाँ जिले में प्री-मैट्रिक छात्रवृति का लाभ पूर्व में 50 हजार छात्र- छात्राओं को मिला रहा था, वहीं सतत प्रयास एवं निगरानी से आज जिले के 1.5 लाख छात्र/छात्राओं को प्री-मैट्रिक छात्रवृति का लाभ मिल रहा है। इसी दिशा में कदम बढ़ाते हुए जिला अंतर्गत संचालित छात्रावासों का कायाकल्प कर ग्रामीण छात्रों को बेहतर शैक्षणिक माहौल देने का कार्य किया जा रहा है। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में पक्की सड़कों का निर्माण बड़े पैमाने पर कराया जा रहा है, जिससे ग्रामीण आधारभूत संरचना में गुणात्मक सुधार हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में जिला में कई महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इसमें सभी कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय को चाइल्ड फ्रेंडली बनाने के लिए पाठ्यक्रम के अनुसार आकर्षक चित्रकारी कराया गया है एवं बच्चों के लिए विद्यालय परिसर में अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस सभागार का निर्माण कार्य भी किया जा रहा है। ये योजनाएं आने वाले समय में क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होंगी। इस क्रम में कई लाभुकों ने अपने अनुभव साझा किए। मौके पर उक्त अतिथियों के अलावा मुख्यमंत्री के सचिव विनय कुमार चौबे, भवन-पथ प्रमंडल विभाग के सचिव सुनील कुमार, डीआइजी कन्हैयालाल मयूर पटेल, उपायुक्त कुलदीप चौधरी, पुलिस अधीक्षक चंदन झा, उप विकास आयुक्त कीर्तीश्री जी. समेत जिला प्रशासन के कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

कभी कम नहीं होगी...

स्थिति-परिस्थिति, सबको ध्यान में रखकर गीत लिखे जाते थे, उसके अनुकूल ही संगीत दिया जाता था। आज के समय में अधिकतर गानों में ऐसी बात नहीं है। उन्होंने कहा- आज जिस प्रकार के फूहड़ गीत-संगीत बनाए जा रहे हैं, वे तो हमारी सभ्यता-संस्कृति का बेड़ा गर्क कर रहे हैं। मेरी देशवासियों से दरख्वास्त है कि इन्हें अवॉयड करें।

साउथ का संगीत वायलिन बिना अधूरा

एक अन्य सवाल के जवाब में उस्ताद जौहर ने कहा कि आज के दौर में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर आधारित संगीत और इलेक्ट्रॉनिक तकनीक के अपने दायरे हैं। यकीनन, तकनीक ने संगीत के लिए भी सुविधाएं दी हैं, परंतु मशीनी संगीत से मूल संगीत को कतई कोई चुनौती नहीं है। वायलिन साज के बारे में उन्होंने कहा कि यह हमारे शास्त्रों में पिनाकी वीणा के रूप में वर्णित है। यह सारंगी आदि के परिवार से जुड़ा है। केवल भारत ही ऐसा देश है, जहां दो शास्त्रीय संगीत शैली हैं- एक हिन्दुस्तानी और दूसरी कर्नाटक की। साउथ का संगीत तो वायलिन के बिना अधूरा है। बॉलीवुड गीतों को सिंफनी में संगीतबद्ध करने का यह आधार है। उस्ताद जौहर ने कहा कि बोकारो में संगीत और संस्कृति का अच्छा माहौल है। यहां एक अच्छे दर्जे के म्यूजिकल-कल्चरल इंस्टीट्यूट शुरू करने की जरूरत है, जिसमें बच्चों के साथ-साथ सभी उम्र के लोग प्रशिक्षण ले सकें।

मिशन चन्द्रयान- 3 - अंतरिक्ष में बादशाहत की ओर एक और कदम

आओ चले चांद पर... चन्द्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश होगा भारत

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : चन्द्रयान- 3 का सफल प्रक्षेपण अंतरिक्ष में भारत की बादशाहत की ओर बढ़ते कदम का एक और नया अध्याय है। 'आओ चलें चांद पर' की दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ चन्द्रयान- 3 ने उम्मीद की एक नई उड़ान आंध्र प्रदेश के श्री हरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से भरी। यह चंद्रमा पर भारत का तीसरा मिशन है, जो अगर सफल हो जाता है तो हमारा देश संयुक्त राज्य अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ और चीन के बाद चौथा देश होगा और इससे संबंधित एक छोटे समूह में शामिल हो जाएगा, जिन्होंने चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की है। उल्लेखनीय है कि इस साल की शुरूआत में एक जापानी स्टार्ट-अप का प्रयास ऊंचाई की गलत गणना के कारण लैंडर के दुर्घटनाग्रस्त होने के साथ समाप्त हुआ, जिसका मतलब था कि अंतरिक्ष यान का ईंधन खत्म हो गया था। स्पेस आईएल और इजराइल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (आईएआई) द्वारा निर्मित एक इजराइली अंतरिक्ष यान भी इस साल की शुरूआत में चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

2020 में चंद्रयान-2 मिशन में एक ऑर्बिटर को सफलतापूर्वक तैनात करने के बाद भारत का अंतरिक्ष उद्योग इस मिशन से मुक्ति की तलाश में होगा, लेकिन इसके लैंडर और रोवर एक दुर्घटना में नष्ट हो गए थे। चंद्रयान-2 मिशन को स्थायी रूप से छाया वाले चंद्रमा के क्रेटर का अध्ययन करने के लिए डिजाइन किया गया था। ऐसा माना जाता है कि इसमें पानी का भंडार है, जिसकी पुष्टि 2008 के पहले चंद्रयान-1 मिशन से हुई थी- जिसने चंद्रमा की कक्षा तो ली, लेकिन उतरा नहीं। यदि सब कुछ योजना के अनुसार हुआ, तो 43.5-मीटर (143- फुट) लॉन्च वाहन मार्क- 3, रॉकेट अंतरिक्ष यान को 23 अगस्त के आसपास निर्धारित लैंडिंग के लिए चंद्रमा की ओर जाने से पहले एक अण्डाकार पृथ्वी की कक्षा में विस्फोट कर देगा, जहां के पास चंद्रयान-2 दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

लॉन्च वाहन मार्क-3 एक तीन चरणों वाला रॉकेट है, जिसमें दो ठोस-ईंधन बूस्टर और एक तरल-ईंधन कोर चरण है। ठोस-ईंधन बूस्टर प्रारंभिक जोर प्रदान करते हैं, इससे पहले कि तरल-ईंधन कोर चरण रॉकेट को कक्षा में ले जाने के लिए निरंतर जोर सुनिश्चित करता है। चंद्रयान -3 में 2-मीटर (6.5-फुट) लंबा लैंडर शामिल है, जिसे चंद्रमा के पास एक रोवर तैनात करने के लिए डिजाइन किया गया है। दक्षिणी ध्रुव जहां पानी की बर्फ पाई गई है।

जानकारों ने उम्मीद जताई है कि प्रयोगों की एक श्रृंखला चलाने के बाद रोवर दो सप्ताह तक कार्यशील रहेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा निजी अंतरिक्ष प्रक्षेपण और संबंधित उपग्रह-आधारित व्यवसायों में निवेश को बढ़ावा देने के लिए नीतियों की घोषणा के बाद से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा लॉन्च देश का पहला बड़ा मिशन है। 2020 के बाद से, जब भारत निजी लॉन्च के लिए खुला, अंतरिक्ष स्टार्ट-अप की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है।

गौरतलब है कि भारत ने हाल के वर्षों में, खुद को वाणिज्यिक अंतरिक्ष संचालन के एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में सशक्त किया है, जिसमें नवंबर 2022 में प्रारंभ नामक मिशन के हिस्से के रूप में अपने पहले निजी तौर पर विकसित रॉकेट, विक्रम-एस का प्रक्षेपण भी शामिल है, जिसका अर्थ है शुरूआत। भारत चाहता है कि उसकी अंतरिक्ष कंपनियां अगले दशक के भीतर वैश्विक प्रक्षेपण बाजार में अपनी हिस्सेदारी पांच गुना बढ़ा लें, जो 2020 में राजस्व के मामले में 2 प्रतिशत से अधिक है। भारत छोटे उपग्रहों को लॉन्च करने में अनुभवी है और इस बाजार पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है। खुद को उपग्रह प्रक्षेपण सुविधा के रूप में पेश करना है, भारत ने यूके स्थित उपग्रह कंपनी वनवेब के लिए 36 इंटरनेट उपग्रहों को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किया है।

अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अनुसार चंद्रयान-3 को चंद्रमा पर पहुंचने में करीब 40 दिन का समय लगेगा। प्रक्षेपण के ठीक 16 मिनट बाद लगभग 2.50 बजे करीब 179 कि मी की ऊंचाई पर चंद्रयान-3 रॉकेट से अलग हो गया। इसके बाद चंद्रयान-3 लगभग 3.84 लाख किमी की अपनी लंबी चंद्रमा यात्रा शुरू करेगा। अंतरिक्ष यान द्वारा ले जाए गए लैंडर के 23 या 24 अगस्त को चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने की उम्मीद है। इसरो ने कहा कि चंद्रयान-3 अंतरिक्ष यान में एक प्रोपल्शन मॉड्यूल (वजन 2,148 किलोग्राम), एक लैंडर (1,723.89 किलोग्राम) और एक रोवर (26 किलोग्राम) शामिल है। रॉकेट का पहला चरण ठोस ईंधन द्वारा संचालित है। दूसरा चरण तरल ईंधन द्वारा संचालित है, जबकि तीसरे और अंतिम चरण में तरल हाइड्रोजन और तरल ऑक्सीजन द्वारा संचालित क्रायोजेनिक इंजन है। चंद्रयान-3 का मुख्य उद्देश्य लैंडर को चंद्रमा की जमीन पर सुरक्षित उतारना है। उसके बाद रोवर प्रयोग करने के लिए बाहर निकलेगा। लैंडर से बाहर निकलने के बाद प्रोपल्शन मॉड्यूल द्वारा ले जाए गए पेलोड का जीवन तीन से छह महीने के बीच है।

इसरो के अध्यक्ष सोमनाथ का कहना है कि चंद्रयान-3 अपनी लंबी यात्रा शुरू कर पृथ्वी की परिक्रमा करेगा, इसके बाद यह 30 दिनों में धीरे-धीरे अगले चरण में चंद्रमा की यात्रा करेगा। यदि सब कुछ ठीक रहा, तब हम 23 अगस्त के आसपास या उसके बाद के दिनों में चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की उम्मीद कर रहे हैं। चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2 मिशन के बारे में उन्होंने कहा कि पहला भारतीय चंद्र मिशन छह महीने से अधिक समय तक चला था और चंद्रमा पर पानी की मौजूदगी पाई थी। जबकि चंद्रयान-2 मिशन में पानी तरल अवस्था में पाया गया था और चंद्रमा पर इसकी पुष्टि भी की। पिछली बार क्रैश लैंडिंग हुई थी। पर इस बार अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत चांद की सतह पर लैंड करने वाला चौथा देश बनने के लिए तैयार है।

बहरहाल, स्पेस के क्षेत्र में हमारी विशेषज्ञता में जबर्दस्त इजाफा हुआ है। चांद को चूमने में अब भारत को ज्यादा इंतजार नहीं। 75 मिलियन डॉलर से कम के बजट पर निर्मित, चंद्रयान -3 अंतरिक्ष अन्वेषण में एक शक्ति और अंतरिक्ष वाणिज्य की नई सीमा के रूप में देश के आगमन को चिह्नित करेगा। भारत अंतरिक्ष को एक रणनीतिक संपत्ति के रूप में देखता है और इसका लक्ष्य बाहरी अंतरिक्ष में अग्रणी खिलाड़ियों में से एक बनना है। यह भारत के लिए इस उद्योग में अग्रणी बनने का अवसर हो सकता है। सांप और साधुओं का देश कहा जाने वाला भारत आज स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया के ताकतवर देशों के साथ खड़ा है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई.पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)